सम्मानित अतिथिगण

माननीय स्वांत रंजन- जयपुर (राजस्थान)
प्रख्यात सामाजिक चिंतक

प्रो. (डॉ.) कुलदीप चंद अग्निहोत्री- चण्डीगढ़
सलाहकार, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार

प्रो. (डॉ.) रमेश चन्द्र सिन्हा- पटना (बिहार)
अध्यक्ष, भा.दा.अ. परिषद्- नई दिल्ली (भारत सरकार)

मा. कृष्ण भट्ट - बंगलौर (कर्नाटक)
कुलाधिपति, उड़ीसा केंद्रीय विश्वविद्यालय

मा. प्रो. (डॉ.) टनकेश्वर कुमार- महेन्द्रगढ़ (हरियाणा)
कुलपति, हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय

श्री अनिल ठाकुर- रांची (झारखण्ड)
सामजिक चिंतक

डॉ. चन्द्र प्रकाश सिंह- प्रयागराज (उत्तर प्रदेश)
सामाजिक चिंतक

श्री विक्टर माल्टो- रांची (झारखण्ड)
सामजिक चिंतक

श्री दानिश आजाद अंसारी - लखनऊ (उत्तर प्रदेश)
माननीय मंत्री, उत्तर प्रदेश सरकार

प्रो. (डॉ.) नागेश ठाकुर- शिमला (हिमाचल प्रदेश)
सामजिक चिंतक

श्रीमती ज्योति कपूर - मुम्बई (महाराष्ट्र)
योग चिंतक

पंजीकरण प्रपत्र

नाम.....

पद.....

विश्वविद्यालय.....

स्थायी पता .....

.....

.....

पत्राचार पता .....

.....

ईमेल .....

दूरभाष .....

पंजीकरण शुल्क: शिक्षक 500/- ☐ शोधार्थी 200/- ☐

Account No: 2062101009761
Account Holder Name- Central University of Himachal Pradesh
Bank & Branch- Canara Bank, Kotwali Bazar, Dharamshala
IFSC Code- CNRB0002062

दिनांक
स्थान हस्ताक्षर

नोट- छाया प्रति तथा शुल्क रसीद को स्कैन कर निम्नलिखित ई-मेल पर भेजें -
cuseminardrhedgewar@gmail.com

हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय
धर्मशाला (हिमाचल प्रदेश)

आज़ादी का अमृत महोत्सव

समाजशास्त्र एवं सामाजिक नृविज्ञान विभाग

ICPR
INDIAN COUNCIL OF PHILOSOPHICAL RESEARCH

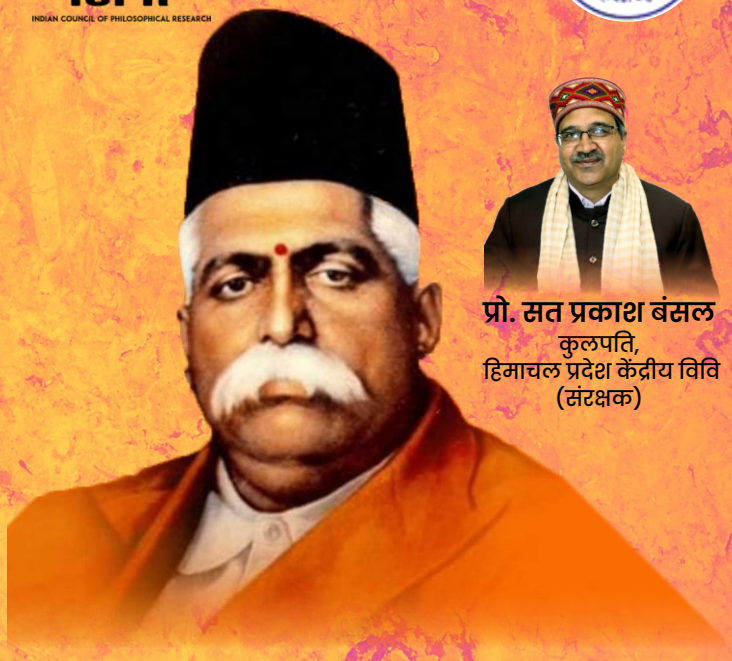

प्रो. सत प्रकाश बंसल
कुलपति,
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विवि
(संरक्षक)

"भारत का सामाजिक एवं सांस्कृतिक दर्शन: डा. केशवराव बलिराम हेडगेवार का योगदान"

दिनांक 24 एवं 25 जून, 2022

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

संयोजक
डॉ. गिरीश गौरव
9430445897
8210181930

सह संयोजक
डॉ. संजय कुमार
8595572895
डॉ. रणजीत कुमार
9418895319

समाजशास्त्र एवं सामाजिक नृविज्ञान विभाग

हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला

संगोष्ठी के विषय में :-

"भारत का सामाजिक एवं सांस्कृतिक दर्शन: डा. केशवराव बलिराम हेडगेवार का योगदान"

डॉ. केशवराव बलिराम हेडगेवार जी का सम्पूर्ण जीवन भारत की सनातन संस्कृति एवम् दर्शन को पुन:स्थापित करने हेतु कृतसंकल्पित थी। डा. हेडगेवार जी के मन में स्वतंत्रता संग्राम के दौरान यह प्रश्न बार-बार उठता रहा कि स्वतंत्रता हमें मिल भी जाएगी तो हम कितने दिनों तक इस स्वतंत्रता को बचाकर रख पाएंगे। उनका मानना था कि भारत की सांस्कृतिक चेतना को लोगों में जागृत किये बिना इस स्वतंत्रता को बनाकर रख पाना असंभव है। इसी को ध्यान में रखकर उन्होंने १९२५ में विजयदशमी को भारतीय सामाजिक और सांस्कृतिक दर्शन के अनुरूप राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना की। डॉ. हेडगेवार जी संगठन के माध्यम से संपूर्ण भारत में एक संगठन की चेतना प्रवाहित कर अपने भारत के लोगों में एकता एवं 'स्व' के प्रति विश्वास व गौरव का भाव प्रतिबिम्बित करना चाहते थे। डॉ. हेडगेवार जी ने उन बातों को चिह्नित करने का प्रयास किया, जिसका स्वामी विवेकानन्द ने शिकागो में शंखनाद किया था कि भारत की आत्मा गाँव में बसती है और भारत की चेतना उसकी सांस्कृतिक जागरूकता है। इन्हीं बातों को आधार बनाकर डॉ. हेडगेवार जी ने संघ का कार्य आरम्भ किया।

एक प्राचीन भारतीय राष्ट्र का पराभव कैसे हुआ और इसे सबल और संगठित राष्ट्र कैसे बनाया जा सकता है, इसी चिंतन ने डॉ. हडगेवार जी को एक ऐसी सामाजिक संस्था को संगठित करने की प्रेरणा दी, जो लंबे समय से चिंतन का केंद्र रही। डॉ. हेडगेवार जी ने न केवल संगठन के स्तर पर विचार करना आरंभ किया बल्कि उन्होंने इससे भी आगे बढ़कर यह प्रयास किया कि उस संगठन के माध्यम से समाज के विभिन्न क्षेत्रों में अनेक संगठन खड़े हो सके एवं भविष्य में उन संगठनों के माध्यम से ही भारत का सांस्कृतिक एवं सामाजिक पुनर्जागरण में योगदान हो। इस संगठन की भी जिम्मेवारी उन्होंने स्वयं पर न लेकर समाज को ही आगे किया और उन्होंने स्पष्ट किया कि संगठन सम्पूर्ण समाज का होगा। भारत की जो परम्परा रही है जिस के सन्दर्भ में प्रसिद्ध समाजशास्त्री जी. एस. घूरिये ने भी कहा है कि भारत को बचाने में या भारत के सांस्कृतिक जागरण में यहाँ के साधु-संन्यासियों की अति महत्वपूर्ण भूमिका रही है। डॉ. हेडगेवार जी ने भी यही प्रयास किया और इस पथ पर चलने के लिये हजारों-लाखों लोगों को तैयार किया तथा भारत की सनातन परम्परा को आधुनिक परिप्रेक्ष्य में लाकर उन्होंने समाज को बदलने एवं सांस्कृतिक चेतना को जगाने का कठिन कार्य किया।

डा. केशवराव बलिराम हेडगेवार जी द्वारा किया गया वैचारिक एवं संगठनात्मक कार्य आज विस्तृत रुप में दिखाई पड़ता है। उन्होंने १९२५ में भारत के समाज को बदलने की सोच रखी। लगभग उसी समय भारत में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की भी स्थापना होती है। यदि वर्तमान में हम दोनों संगठनों का तुलनात्मक अध्ययन करें तो यह पाते हैं कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ भारत को ही नहीं अपितु संपूर्ण विश्व को मार्ग दिखाने में समर्थ है और दूसरी ओर १९२५ में स्थापित भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी लगभग मृतप्राय हो गयी है। इसके पीछे यही कारण है कि डॉ. हेडगेवार जी ने भारत की आत्मा को पहचाना और उसी के अनुरूप वैचारिक और संगठनात्मक कार्य किया।

डॉ. केशवराव बलिराम हेडगेवार जी का चिंतन भारत के सनातन चिंतन पर आधारित था। यही कारण है कि भारत के चित्त के विपरीत किये गए प्रयास लगभग आज शून्यता पर चले गए है। परन्तु डॉ. हेडगेवार जी द्वारा स्थापित संगठन, सिद्धांत, विचार उनकी दृष्टि भारत को ही नहीं बल्कि पूरे विश्व के कल्याण के लिए प्रेरित कर रही है। यही कारण है की उनके जीवन एवं कार्यपद्धति से प्रेरणा प्राप्त कर आज भारत पुन: विश्वगुरु के सिंहासन पर आरूढ़ होने हेतु कृत संकल्पित होकर अग्रसर है। किसी भी सैद्धांतिक विचारधारा से सहमति व असहमति होना लोकतंत्र में स्वभाविक है, परन्तु समय-समय पर उस का वैज्ञानिक शोध और मूल्यांकन होते रहना चाहिए। यह संगोष्ठी इसी ध्येय को लेकर आयोजित की जा रही है ताकि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में डा. केशवराव बलिराम हेडगेवार जी के सामाजिक एवं सांस्कृतिक दर्शन पर अनुसन्धानात्मक कार्य हो सके।

उद्देश्य:

- अकादमिक जगत में भारत के 'स्व' दर्शन की मान्यता को स्थापित करने का प्रयास।
- डा. केशवराव बलिराम हेडगेवार जी के सामाजिक चिंतन पर चर्चा।
- भारतीय दर्शन वैश्विक सद्भाव पर चर्चा।
- राष्ट्र निर्माण में डा. केशवराव बलिराम हेडगेवार जी के विचार एवं दृष्टिकोण पर विस्तृत चर्चा।
- समाज विज्ञान के ज्ञान एवं अनुसंधानात्मक परिप्रेक्ष्य में डा. केशवराव बलिराम हेडगेवार जी के दर्शन को समाहित करने का प्रयास।
- भारत की परम्परा, व्यवहार एवं दर्शन को आधुनिक स्वरुप में डा. केशवराव बलिराम हेडगेवार जी के दर्शन के माध्यम से समझने का प्रयास।
- डा. केशवराव बलिराम हेडगेवार जी के दर्शन में सामाजिक समरसता एवं समाज एकता के भाव के ऊपर चर्चा करना।

उप-विषय:

- भारत की राष्ट्रीय अस्मिता एवं डा. केशवराव बलिराम हेडगेवार
- भारत के स्वतंत्रता संग्राम में डा. केशवराव बलिराम हेडगेवार जी की भूमिका
- स्वतंत्रता संग्राम की दिशा: डा. केशवराव बलिराम हेडगेवार जी का योगदान
- भारत का वैश्विक दर्शन एवं डा. केशवराव बलिराम हेडगेवार
- डा. केशवराव बलिराम हेडगेवार जी के दर्शन में सामाजिक समरसता एवं राष्ट्रीय अखंडता
- डा. केशवराव बलिराम हेडगेवार जी के सामाजिक चिंतन एवं राष्ट्रीय दृष्टिकोण का प्रतिबिम्ब- राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

कृपया अपने शोधपत्र की सॉफ्ट कॉपी २० जून २०२२ तक अणुसंकेत (ईमेल) के माध्यम से भेज दें।

cuseminardrhedgewar@gmail.com